Course-07. Pedagogy of Social Science -

Topic: "Social Science Teacher"

सामाजिक विज्ञान शिक्षक

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षक वह अभिकर्ता होता है जो शिक्षण प्रक्रिया को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने का कार्य करता है। अतः किसी भी ज्ञान के क्षेत्र को शिक्षार्थी या अधिगमकर्ता तक सफलतापूर्वक पहुँचाने का कार्य एक आदर्श शिक्षक शिक्षक ही कर सकता है। इसलिये सामाजिक विज्ञान शिक्षक के आदर्श गुणों ज्ञान हर एक सामाजिक विज्ञान शिक्षक में सन्निहित होना चाहिए। अतः इस पाठ में सामाजिक विज्ञान शिक्षकों से जुड़े पहलुओं का ~~स्वरूप~~ विवरण निम्नांकित है—

मनुस्मृति में शिक्षक के लिये तीन प्रकार बताए गए हैं— आचार्य, उपाध्याय और गुरु।—

"उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥" मनुस्मृति

लोक व्यवहार में शिक्षक, अध्यापक आचार्य की अपेक्षा विद्यादान करनेवाले व्यक्ति के लिये 'गुरु' शब्द का प्रयोग अधिक प्रचलित है। गुरु शब्द की व्याख्या इस प्रकार प्रसिद्ध है— "गिरति अज्ञानान्धकारम् इति गुरुः" अर्थात् जो अपने उपदेशों के माध्यम से शिष्य के ~~अन्धकाररूपी~~ अज्ञानतारूपी अंधकार को नष्ट कर देता है वह गुरु है। शिष्य-वर्ग में अपने गुरु

P.T.O.

गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और परम ब्रह्म के समकक्ष मानने की यह सूक्ति बहुत प्रचलित है —

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥"

'आचार्य' के कार्य के सम्बन्ध में 'वायुपुराण' यह वर्णन मिलता है —

"स्वयमाचरते यस्माद् आचारं स्थापयत्यपि।
आप्नोति च शास्त्रार्थं यमैः सनियमैर्युतः ॥

अर्थात् जो स्वयं अपने विद्या के अनुकूल आचरण करते हैं, विद्यार्थियों को आचार में स्थापना करते हैं और यम-नियमशील होकर शास्त्रीय अर्थों की प्राप्ति करते हैं वे 'आचार्य' हैं। इस श्लोक में आचार्य के कार्यों को लेकर आचार्य के लक्षण/गुण प्रस्तुत किये गए हैं। इसमें तीन विशिष्ट कार्य कहे गए हैं।— 1-स्वयमाचरण, 2-दूसरों को आचरण सिखाना और 3- शास्त्र-ज्ञान का अभ्यास करना है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आचार्य बालक की मानसिकता को उसके परिवार से ही न बाँधकर एक बृहद्-कुल की भावना से जोड़ता था। आचार्य का कार्य बालक को छोटे कुल से निकालकर बड़े (कुल) गुरुकुल में रखना था। ~~व्यक्~~ वैयक्तिक (individual) परिवार के स्थान पर व्यक्ति सामाजिक व पाला और संस्कारित किया जाता था। वे कहने में समर्थ हो पाते थे —

"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ॥" अर्थात् हम अपने राष्ट्र में जागरूक रहते हुए अग्रणी बनें। राष्ट्र का नेतृत्व करें।

P.T.O —

प्राचीनकाल में अध्यापक को गुरु अथवा आचार्य कहते थे। गुरु शब्द में संयम तथा आचार्य में आचरण के आदर्श विद्यमान हैं। इन दोनो गुणों के आधार पर दी जाने वाली शिक्षा के परिणामस्वरूप गुरु अथवा आचार्य अपने नामों को सार्थक करते थे।

अध्यापक में विद्वता नीतिमता और शासन क्षमता (अनुशासन बनाये रखने की क्षमता) होना उसकी सफलता के लिये आवश्यक माना गया है। अध्यापन कार्य उसकी वृत्ति है व्यवसाय नहीं। ध्येय की स्पष्टता, कार्य करने की जानकारी, रुचि तथा रुचि से कार्य करने की प्रेरणा, प्रजा भाव से किया गया कार्य, ज्ञान अर्जन की क्षुधा ऐसे अनेक गुण हैं जिसके कारण अध्यापक एक आदर्श अध्यापक बनता है।

इस सन्दर्भ में शिक्षिका एशरवानेर महोदय ने कहा — "व्यवस्था कैसी भी हो कहीं भी हो कोई भी हो अगर अध्यापक में कल्पना है सृजन के तत्व हैं, तो वही जगह जीवन्त हो उठेगी, वहीं बच्चे खिल-खिला उठेंगें और सीखना एक रूढ़ि न हो कर रोज का सुख व आनन्द होगा, आनन्द रहित शिक्षण एक प्रकार से दण्ड है।"

वास्तव में अध्यापक को छात्र की क्षमताओं को पहचान कर आत्मीय प्रेम प्रकट करते हुए बालक के अंतःकरण में प्रवेश कर उसकी जिज्ञासा को जगाने का प्रयत्न करना चाहिए। आचार्य ब्रह्मा के समान शिल्पी एवं सृजनकर्ता होता है। इसी लिये कहा भी गया है —

[illegible]

"School building is just like a lotus but our Acharya gives sweet Fragrance to it."

आचार्य में अग्निदेव के समान अनल तत्व और पावक तत्व के गुण होने चाहिए। असीम ज्ञान सीखने की असीम श्रद्धा चाहिए और इसे सदा प्रज्वलित रखने की आवश्यकता है इस हेतु अनल तत्व चाहिए तथा दूसरे को पवित्र बनाने के लिये स्वयं का पावकत्व आचरण चाहिए।

आधुनिक विचारधारा पूरक पोषक पाश्चात्य विद्वानों के आधार पर न्यूयॉर्क के शिक्षा विभाग ने शिक्षकों के गुणों को निम्नवत बताया है — "Traits of A Good Teacher" —

T – Thought-Fulness (विवेक)
R – Reliability (विश्वसनीयता)
A – Ability in Leadership (नेतृत्व की क्षमता)
I – Integrity (सच्चाई या निष्कपटता)
T – Tact (चतुराई)
S – Sence of humour (विनोद प्रिय)
O – Objectivity (वस्तुनिष्ठता)
F – Fluency (वाक्पटुता)
A – Ability to do creditable College work (कॉलेज कार्य को उत्तम ढंग से करना)
G – Gregariousness (सामूहिकता)
O – Open mindness (नवविचार ग्राह्यता)
O – Originality (मौलिकता)
D – Descernment (दूरदर्शिता)
T – Toddi Tidiness (स्वच्छता)
E – EnThusiasm (उत्साह)
A – Adaptability (अनुकूलनशीलता)

P.T.O –

C – Co-operative (सहकारिता)
H – Health (स्वास्थ्य)
E – Efficiency (कुशलता)
R – Resourcefulness (साधन सम्पन्नता)

शिक्षक के सामान्य गुणों को उपरोक्त प्रारूप में समझा जा सकता है। विशेषकर सामाजिक विज्ञान के अध्यापक की भूमिका को डेविस (1978) महोदय के द्वारा निर्धारित प्रारूप में प्रदर्शित किया जा सकता है। —

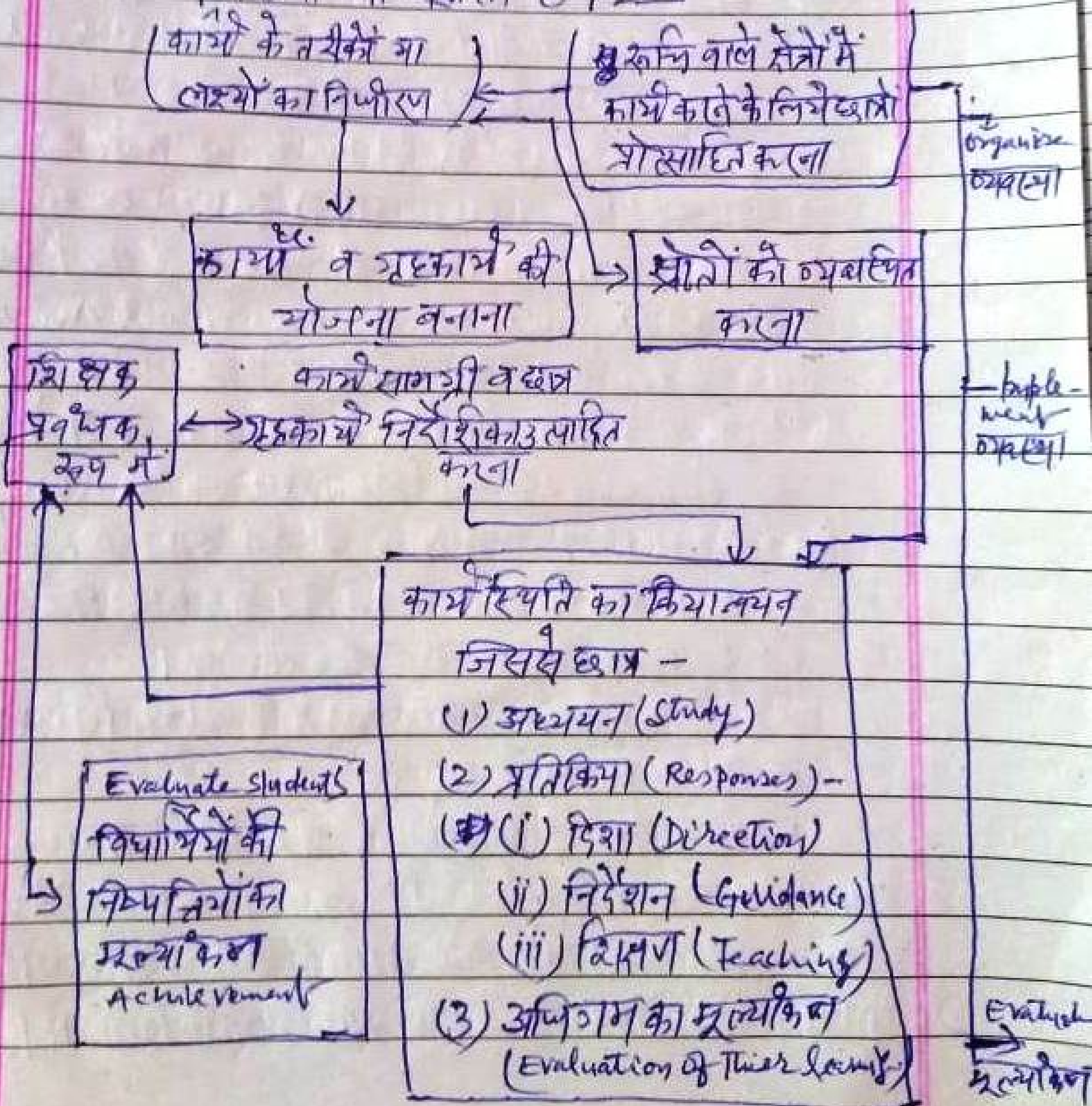

सामाजिक विज्ञान शिक्षक के गुणों को निम्न लिखित रूप में सामान्यतया व्यक्त किया जा सकता है:- (Characteristics of Social Science Teacher):-

(1) मानवीय सम्बन्धों के विकास की कला (Art of Developing development of Human Relations)
(2) विस्तृत क्षेत्र में यात्रा किया हुआ व्यक्ति (Widely Travelled Person)
(3) विभिन्न कौशलों का ज्ञान (Know different Skills),
(4) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का गुण (International Understanding)
(5) दैनिक शिक्षण में सामाजिक घटनाओं का उपयोग करना (Use of Current Affairs in day to day Daily)
(6) सामाजिक अध्ययन की पाठ्य सामग्री क्रियाओं का ज्ञान (Knowledge of co-curriculum Activities in Social Studies)
(7) सामुदायिक स्रोतों का शिक्षण में प्रयोग (Use of community Resources in Teaching)
(8) अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान (Knowledge of Right Duty)
(9) व्यावसायिक उन्नति का पक्षधर (Supporter of Professional Growth). I.

उपरोक्त गुणों का विस्तृत विवरण निम्नरूप से दिया जा सकता है—

(1) मानवीय सम्बन्धों के विकास की कला।- सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन है अतः इस विषय के अध्यापकों को मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं से अवगत होना चाहिए तथा उनका समाधान कर सकना

P.T.O

स्थापित करते आना चाहिए। आई० बी० मार्टिन के अनुसार — "सामाजिक अध्ययन का अध्यापक मानवीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ के रूप में जनता की रुचि एवं सामयिक विवादों में वह अन्य अध्यापकों की तुलना में निर्णायक के रूप में रहता है।

2. विस्तृत क्षेत्र में यात्रा किया हुआ व्यक्ति —

विभिन्न संस्कृति, भौगोलिक, ऐतिहासिक इमारतों, स्थानों, कलादीर्घाओं, संग्रहालयों, बाँध, कारखाने, प्रयोगशालाएँ आदि प्राथमिक स्रोत हैं जहाँ महत्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त होती है। उपर्युक्त स्थलों पर यात्रा किए अध्यापक का अवबोध स्तर व दृष्टिकोण विस्तृत होता है।

3. विभिन्न कौशलों का ज्ञान —

सामाजिक अध्ययन के अध्यापक में विभिन्न कौशलों का ज्ञान होने चाहिए — (NCERT) एन० सी० ई० आर० टी० की कोर प्रोग्राम पैकेज (CTPP) ने अध्यापक में निम्नलिखित कौशलों के प्रशिक्षण के बारे में बताया है। —

(a) कक्षा-प्रबन्ध कौशल (Skill of Class-Management) — इसके अन्तर्गत निम्न व्यवहारों की चर्चा की गई है —

(i) मुखीय मुद्राओं पर नियंत्रण एवं सुधार
(ii) कक्षा में उपयुक्त स्थान लेना और स्थगित करना
(iii) कक्षा में गतिशील रहना
(iv) विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल अपनी मुद्राओं में परिवर्तन करना

(b) प्रभावी रूप से सम्प्रेषण करने का कौशल —

P.T.O

(Skill of Communication) —
(i) प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति देना
(ii) अभिनय कला का ज्ञान (iii) कथन प्रविधि का ज्ञान,
(iv) व्याख्या कौशल का ज्ञान एवं
(v) प्रदर्शन कौशल का ज्ञान ।

(c) अन्तः क्रिया कौशल (Skill of Interaction) —
(i) प्रश्नोत्तर एवं पुनर्बलन का ज्ञान
(ii) विवाद, चर्चा का ज्ञान एवं
(iii) समस्या-समाधान का ज्ञान

(d) सामग्री के उपयोग का कौशल (Skill in the use of Teaching Aids) — इसके अन्तर्गत —
(i) आवश्यकतानुसार सहायक सामग्री का चयन
(ii) चार्ट, प्रतिमान, मानचित्र, चित्र आदि के निर्माण की कला।
(iii) यान्त्रिक सहायक सामग्री की क्रियाविधि का ज्ञान
(iv) श्यामपट्ट पर लिखते समय एवं उससे व्याख्या करते समय अध्यापक की स्थिति का ज्ञान.

(e) व्यवहार व दृष्टिकोण का कौशल (Skill of Behaviour & Attitude) — इसके अन्तर्गत निम्नलिखित गुणों को शामिल किया जाता है —
(i) धैर्यपूर्वक सुनना (ii) सुझाव देना (iii) निर्देशन करना तथा (iv) परामर्श करना ।

4. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का गुण (Skill of Understanding International Understanding) —
अधिगमकर्ता में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना जाग्रत करने के लिये स्वयं अध्यापक में इस गुण का होना आवश्यक है।

P.T.O. —

इसके लिए अध्यापक को शारीरिक, राजनैतिक, आर्थिक धार्मिक, भाषागत शैक्षिक व मनोवैज्ञानिक अन्ध विश्वासों या बाधाओं मुक्त पक्षपात विहीन होना चाहिए।

(5) दैनिक शिक्षण में सामाजिक घटनाओं का उपयोग करना — सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को विभिन्न नवीन घटनाओं की जानकारी होनी चाहिए तथा उनका शिक्षण में कब कहाँ व कैसे उपयोग करना है, आना चाहिए।

(6) सामाजिक अध्ययन की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का ज्ञान — सामाजिक अध्ययन शिक्षक को सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का ज्ञान होना चाहिए जिससे वे सामाजिक-कक्ष या प्रयोगशाला, क्लब एवं संग्रहालय का शिक्षण में उचित प्रयोग कर सके तथा अधिगमकर्ताओं में विषय के प्रति सकारात्मक प्रवृत्ति विकसित कर सकें। उन्हें क्लब की गति-विधियों का ज्ञान भी होना चाहिए।

7- सामुदायिक स्रोतों का शिक्षण में प्रयोग — अध्यापक अपने शिक्षण में समुदाय का उपयोग दो तरीके से कर सकते हैं — (1) स्रोतों को कक्षा में लाकर तथा (2) कक्षा को समुदाय में ले जाकर।
सामाजिक अध्ययन में उपर्युक्त दोनों ही प्रकार से समुदाय के समीप होकर शिक्षण को अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

8— अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान —
सामाजिक अध्ययन शिक्षक को स्वयं अधिकारों व कर्तव्यों की जानकारी होनी चाहिए। वे अपने अधिगमकर्ताओं के अधिकारों की रक्षा कर पायेगा। समाज के जागरूक नागरिक के रूप में स्वयं कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए छात्रों को

P.T.O.—

अपने कर्तव्यों के निर्वहन के लिये प्रेरित करना चाहिए।

9 — व्यावसायिक उन्नति का पक्षधर —

सामाजिक अध्ययन एक ऐसा विषय है जिसकी विषयवस्तु में नवीन तथ्यों का समावेश होता रहता है साथ यह समाज के विकास की दिशा में कार्य करती है। अतः इस विषय के अध्यापक (Teacher) के लिए निरन्तर व्यावसायिक उन्नति आवश्यक है।

व्यावसायिक उन्नति के लिये निम्न उपाय अपेक्षित हैं —

(1) नए ज्ञान से अवगत होना (2) नवीन शिक्षण विधियों से अवगत होना।

(3) समय-2 पर पत्र पत्रिकाओं में छपनेवाले विषय से सम्बन्धित लेखों का संग्रह करना।

(4) स्वयं के विचार लिखने व शोध करने का प्रयास करना

(5) इन्टरनेट से नवीन सूचनाएँ प्राप्त करना

(6) विषय से सम्बन्धित विभिन्न सरकारी गैरसरकारी विभागों तथा पर्यटक/पर्यटन विभाग, भ्रष्टाचार ब्यूरो, सिंचाई विभाग, ~~कृषि~~ कृषि, पशुपालन (विभाग) आदि के सम्पर्क में रहना और वहाँ से ज्ञान के प्राथमिक स्रोतों की सहायता लेकर उनका अपने शिक्षण में प्रयोग करना

(7) विषय से सम्बन्धित होने वाली विचार गोष्ठियों, कार्यशालाओं में सम्मिलित होना।

(8) अन्य विद्यालयों के सामाजिक अध्ययन कक्षों, प्रयोगशालाओं क्लबों, संग्रहालयों इत्यादि के सम्पर्क में रहना व सम्भव हो उनका सदस्य बनना।

(9) विभिन्न पत्रिकाओं व जनरल का अध्ययन करना जो सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित हो। इत्यादि —

अंत में उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर

P.T.O —

हम कह सकते है कि सामाजिक विज्ञान/अध्ययन का के शिक्षक में वे समस्त गुण आवश्यक है जो आधुनिक समाज के निर्माण के लिये अनिवार्य है। इस तथ्य को एक शिक्षाशास्त्री रविन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार हम कह सकते है कि — "एक शिक्षक/अध्यापक उस समय तक वास्तविक रूप में अध्यापन का कार्य नहीं कर सकता जब तक वह निरंतर सीखता न रहे।" एक दीपक दूसरे दीपक को ज्योतिर्मय करने में असमर्थ है, जब तक कि वह स्वंय दीप्तिमान न हो। वह अध्यापक जो अपने विषय की समाप्ति पर पहुँच गया है, जो ज्ञान से जीवन का तारतम्य/तादातम्य न रखकर पाठों की पुनरावृत्ति करता है, छात्रों के मस्तिष्क के बोझ से लाद रहा है, वह उन्हें और उद्दीप्त नहीं कर पाता।

"A Teacher can never Truely Teach unless he is still learning." A Lamp ~~cannot unless~~ can never light another lamp unless it continuous to burn its own flame. The Teacher who has come to the end of his subject, who has no living traffic with his knowledge, but merely repeats his lesson to his students can only load their minds. He can not quicken them."

11/05/2020